रवीन्द्रनाथ टैगोर के भौक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता

कोमल यादव
सहायक प्राध्यापक,
बी.एड. विभाग,
एन०आर०ई०सी० कॉलिज,
खुर्जा, भारत

सारांश

रवीन्द्रनाथ टैगोर बच्चों के सर्वांगीण विकास को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानते थे। वे शिक्षा के द्वारा मानव और प्रकृति के आदि सम्बन्ध को मजबूत करना चाहते थे। वे मानव को शिक्षा के द्वारा प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाना चाहते थे। टैगोर शिक्षा के द्वारा प्राच्य एवं पाश्चात्य संस्कृतियों में सहयोग चाहते थे। वे पाठ्यक्रम को विस्तृत बनाने के पक्षधर थे, ताकि जोवन के सभी पक्षों का विकास हो सकें। वे मानवीय एवं सांस्कृतिक विषयों को महत्त्वपूर्ण स्थान देते थे।

मुख्य शब्द : सर्वांगीण विकास, संवेदनशील, संस्कृति एवं पाठ्यक्रम।

प्रस्तावना

''मैंने स्वप्न देखा कि जीवन आनन्द है। मैं जागा और पाया कि जीवन सेवा है, मैंने सेवा की और पाया कि सेवा में ही आनन्द हैं।''

भारतीय नवजागरण के सन्देशवाहक रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कला एवं साहित्य के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग किये। उनका समन्व्यकारी दर्शन जीवन की समस्त विद्याओं–साहित्य, संगीत, चित्रकला, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाज–सुधार एवं शिक्षा को ओत–प्रोत करने वाला था। टैगोर जी शिक्षा का अर्थ वैयक्तिक एवं सामाजिक दोनों प्रकार की उन्नति मानते थे। वह प्रकृति के घनिष्ठ सम्बन्ध में ही शिक्षा संभव मानते थे। उनके विचार में शिक्षा को व्यवहारिक होना चाहिए और उसमें सामाजिक आवश्यकताओं, परम्पराओं, आदर्शों, मूल्यों को मान्यता मिलनी चाहिए। रवीन्द्रनाथ जी विश्व के सभी प्राणियों को एक ही परमपिता परमेश्वर की सन्तान मानते थे। इसलिये उन्होंने संकीर्ण राष्ट्रीयता के स्थान पर विश्व–बंधुत्व की भावना के विकास को शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य माना है। विश्वभारती के माध्यम से पूर्व एवं पश्चिम की संस्कृतियों में समन्वय लाने का सफल प्रयास किया है। रवीन्द्रनाथ जी ने लिखा है ''जो बुद्धिमान है वह आत्म–सन्तोष की इच्छाओं के साथ सामाजिक हित की इच्छाओं की संगति का प्रयास करता है और केवल इसी प्रकार से वह अपनी उच्चतर आत्मानुभूति कर सकता है।'' रवीन्द्रनाथ जी का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य बालक में नैतिकता एवं बुद्धिमानी का पल्लवन होना चाहिए। नैतिकता के विषय में उन्होंने लिखा है, ''यह सत्य है कि हमको पश्चिम से विज्ञान अपनाना है लेकिन यह बड़ा अपमानजनक है, यदि हम अपनी नैतिक, बौद्धिक सम्पत्ति भूल जाते हैं जो बहुत ही मूल्यवान हो।'' टैगोर जी का भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का अनुयायी होते हुए भी पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान से कोई विरोध नहीं था। वे पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान को अपनी संस्कृति के अन्धानुकरण के विरोधी थे। उन्होंने लिखा है कि हमको अवश्य ही अपनी शिक्षा का उद्देश्य (प्रयोजन) मनुष्य के सर्वोच्च प्रयोजन के समक्ष आत्मा का पूर्ण विकास और उसकी स्वतन्त्रता बनाना चाहिए। रवीन्द्र जी बालक का शारीरिक विकास प्रकृति के प्रांगण में स्वतंत्र रूप में खेलने–कूदने एवं क्रिया कलापों में मानते थे।

अध्ययन का उद्देश्य

आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। शिक्षा की उद्देश्यहीनता, विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता एवं शिक्षकों में बढ़ती कर्तव्यहीनता चिन्ता का विषय है। आधुनिक समाज की शिक्षा व्यवस्था को एक सटीक मार्ग दिखानें की आवश्यकता है। टैगोर के शैक्षिक विचार वर्तमान विश्व के लिये प्रेरणा के स्त्रोत हैं। टैगोर के समय में संयम एवं सदाचार पर विशेष ध्यान दिया जाता था। आज शिक्षक एवं शिक्षार्थी के बीच शिष्टाचार एवं सम्मान समाप्त हो गया है। इसके लिये हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ही जिम्मेदार है। टैगोर ने छात्र जीवन को बहुत पवित्र माना है। उन्होंने विद्यार्थी जीवन में कुछ आवश्यक गुणों की अपेक्षा की है, जैसे– आत्मसम्मान, अनुशासन, आत्मानुभूति, विनम्रता, स्वच्छता एवं कर्तव्यपरायणता। इन गुणों का विकास केवल शिक्षा के

माध्यम से ही सम्भव है। अतः रवीन्द्रनाथ जी की आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा विद्यार्थी जीवन में मानवीय मूल्यों का विकास करती है, जिनकी उपयोगिता एवं सार्थकता प्रत्येक काल में प्रासंगिक बनी रहेगी।

अध्ययन की विधि

इस लघु शोध का विषय एतिहासिक होने के कारण एतिहासिक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया ह।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान शिक्षा पद्धति की विसंगतियों को ध्यान में रखते हुए इस लघु शोध की आवश्यकता महसूस की गई। आज शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञानार्जन न होकर उपाधि अर्जित करना है। इसलिये शिक्षण संस्थाए, अराजकता का केन्द्र बनती जा रही है। शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है तथा युवामन अपने दायित्वों से पलायन कर रहा है। इन विषम परिस्थितियों में कौन से तत्वों का सम्मिश्रण किया जाए जिससे इन विसंगतियों का निराकरण किया जा सके।

प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था अध्यात्म प्रधान थी। जिसमें आत्मसाक्षात्कार एवं नैतिक उत्थान पर बल दिया जाता था। टैगोर के अनुसार शिक्षा का अर्थ व्यक्ति का आध्यात्मिक, नैतिक एवं व्यवहारिक उत्थान है। वे शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष के अलावा कला, संगीत एवं रंगमंच जैसे क्षेत्रों से सम्बन्धित शिक्षा के पक्षधर थे। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे भ्रम की स्थिति में रवीन्द्र नाथ टैगोर के विचार समाज एवं शिक्षा में उत्थान का कार्य करेंगे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का भौक्षिक द�र्शन

टैगोर जी बालक में आत्मानुशासन के पक्षधर थे। इसके लिए वे स्वतंत्रता के पक्षधर थे किन्तु स्वतंत्रता को स्वच्छन्दता नहीं बनने देना चाहिए। इसके लिए वे बालक की रूचि और आवश्यकतानुसार शिक्षण सामग्री एवं पद्धति के निर्धारण के समर्थक थे। बच्चे अपनी रूचि के अनुसार कार्य करें एवं क्रियाशील रहें। शिक्षक उन्हें आवश्यकतानुसार मार्ग–दर्शन तथा प्रेरणा प्रदान करता रहे। टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य आत्मा की स्वतंत्रता प्रदान करना है। उस सत्य को प्राप्त करना है जो हमारे अंतःकरण में प्रकाश के रूप में विद्यमान रहता है। इसकी प्राप्ति आत्मानुशासन द्वारा ही सम्भव है। इसलिए उन्होंने शांति निकेतन में बालकों का न्यायालय स्थापित किया, जहाँ बच्चे स्वयं अपने आचरण को न्याय की कसौटी पर कसते है। रवीन्द्रनाथ जी कहते हैं कि अपराध करना बालकों का काम है और क्षमा करना शिक्षकों का धर्म है। जिस प्रकार एक जलती हुई दीपशिखा ही दूसरे को प्रज्वलित कर सकती है उसी प्रकार एक शिक्षक तब तक विद्यार्थी को ज्ञान–युक्त नहीं कर सकता जब तक कि वह स्वयं ज्ञानार्जन में व्यस्त न हो। ज्ञानवान होने के साथ ही उसे विनय, धैर्य, सहन–शीलता, प्रकृति–प्रेम, व्यवहार–कुशलता, जनतांत्रिक तथा अध्ययन–शीलता जैसे गुणों से युक्त होना चाहिए।

योग्य शिक्षकों के महत्व की ओर संकेत करते हुए टैगोर स्वीकार करते है कि ''अगर हमें सुयोग्य शिक्षक मिल जाये तो वे हमारे बालको को शरीर श्रम का महत्व और गौरव समझाएं। बालक शरीर श्रम को, बुद्धि के विकास को एक अविभाज्य अंग एवं साधन मानना सीखेंगे– और यह समझने लगेंगे कि अपनी मेहनत से अपनी पढ़ाई का खर्च चुकाने में देश की सेवा है।''

रवीन्द्रनाथ जी वर्तमान शिक्षा पद्धति से असन्तुष्ट थे। बालक की प्रकृति के अनुरूप शिक्षण पद्धति के वे समर्थक थे। टैगोर की राय में प्रकृति के अनुसार शिक्षा देने का सर्वोत्तम साधन मन को विकसित करना है। बालक स्वयं तथ्य को खोजे जिससे उनके मस्तिष्क को पूर्ण गतिशीलता और खोज का आनन्द प्राप्त होगा। उनके मत में बालक में अन्तर्निहित स्वाभाविक जिज्ञासा और सामाजिक प्रवृत्ति उसे उन क्रियाओ की ओर प्रवृत्त करती है जिन्हें व्यस्क खेल कहते है। खेल व्यर्थ का कार्य नहीं अपितु चेतना के विकास की गम्भीर क्रिया है। ये क्रियाएं सभी बालकों के लिए सामान्य हैं। धीरे–धीरे बालक की प्रवृत्ति खेल क्रियाओं की ओर से प्रयोजनपूर्ण क्रियाओं की ओर होती है। खेल तथा प्रयोजनपूर्ण कार्य के संयोग के द्वारा विकास करके बालक किशोरावस्था में प्रवेश करता है। इस अवस्था में बौद्धिक प्रशिक्षण द्वारा उसे ज्ञान की प्राप्ति करानी चाहिए। उनकी राय में विभिन्न विषयों का ज्ञान देते समय तथ्य बालकों को इस प्रकार दिए जाएं कि उनके मन में आन्दोलन खड़ा कर दें, उनकी विचार शक्ति उत्तेजित करें। ''शिक्षा का सबसे बड़ा अंग 'समझा देना' नहीं है वरन् 'मन' पर आघात करना है।'' 'जीवन स्मृति' में उन्होंने लिखा है कि ''बचपन में बहुत सी बातें मेरी समझ में नहीं आती थी, किन्तु मरे मन में आन्दोलन खड़ा कर देती थी।''

रवीन्द्र जी ने व्यक्तित्व के विकास के लिए बाल–केन्द्रित, विस्तृत तथा रचनात्मक पाठ्यक्रम की व्यवस्था पर विशेष बल दिया है। व्यक्तित्व के सभी पक्षों, शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, नैतिक तथा आध्यात्मिक स्तर के विकास के लिए ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

निष्कर्ष

टैगोर के शिक्षा सम्बन्धी विचार व्यावहारिक जीवन तथा यथार्थ जगत से सम्बन्धित हैं। उन्होंने अपने शिक्षा–सिद्धांत को शान्ति निकेतन की स्थापना कर साकार रूप दिया है। वह प्राचीन भारतीय संस्कृति के पोषक थे। स्वामी विवेकानन्द की भाँति उनका भी मत था की पश्चिम को पूर्व से अध्यात्मवाद सीखना है तो पूर्व को पश्चिम से भौतिकवाद। उनके विचार से भारतीय संस्कृति ही विश्व को कल्याण के मार्ग पर ले जा सकती है।

साहित्य, संगीत और कलाओं को शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने का श्रेय टैगोर को प्राप्त है। वह बाल केन्द्रित शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने में समर्थ हुए तथा शिक्षण और अधिगम में शिक्षक और शिक्षार्थी को पूर्ण स्वतंत्रता देने के पक्ष में थे। वह आत्मानुशासन के समर्थक थे तथा उदार, उपयोगी और व्यवहारिक शिक्षण पद्धतियों के पोषक थे। उनके विचार से शिक्षा का कार्य प्राचीन तथा नवीन, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय, एकता तथा

अनेकता के बीच सन्तुलित दृष्टिकोण का विकास करना था। मानव धर्म और मानवीय गुणों के आधार पर वे विश्वधर्म की व्याख्या करते थे और इसे शिक्षा का अनिवार्य अंग मानते थे।

सन्दर्भ सूची

दी फिलासफी ऑफ रवीन्द्रनाथ टैगोर, विनोद गोपाल रे हिन्द किताब, मुम्बई।

गाँधी, टैगोर के विचार, डॉ० एम०सी० जोशी।

गाँधी, नेहरू और टैगोर, प्रकाश नारायण नाटाणी।

भारत के महान शिक्षा–शास्त्री, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।

भारतीय शिक्षा दर्शन, राम नाथ शर्मा।

भारतीय शिक्षा दार्शनिक, कीर्ति देवी सेठ।

भारतीय शिक्षा दर्शन, हुमायूँ कबीर।

रवीन्द्रनाथ टैगोर, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी, प्रेस, कृष्ण कृपलानी।

रवीन्द्र दर्शन, कृष्णन राधा।

रवीन्द्रनाथ टैगोर, राजेन्द्र वर्मा प्रोफेट अगेन्सट, सेटेलिटेरियन्इज्म एशिया, मुम्बई।

शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त, एस०के० अग्रवाल।

शिक्षा सिद्धान्त, सरयू प्रसाद चौबे।

शिक्षा के सिद्धान्त और आधार, गुप्त और पाल।

https://learnsabkuch.in

https://www.scotbuzz.org

https://educationmirror.in